अक़्ल बड़ी या अंक...?

प्रमोद कुमार

क्या है अनिवार्यता?

अच्छे प्रदर्शन का चौतरफ़ा दबाव, डांट-डपट, अव्वल आने की अनिवार्यता, औरों से तुलना, बच्चे इन सब बातों का तनाव नहीं झेल पाते और टूट जाते हैं। बच्चा अपने

जीवन में सफलता मिलती है, अक्ल से। इसमें कड़ी मेहनत और लगन का भी योगदान होता है, लेकिन परीक्षा के प्राप्तांकों से इसका कोई ख़ास वास्ता नहीं होता।

विकास के क्रम में खुद तय नहीं कर पाता कि वो क्या करना चाहता है? अभिभावक उस पर अपनी आशाओं का बोझ डाल देते के पास ज़्यादा संसाधन हैं, हाथ में मोबाइल है, सारी जानकारियाँ चुटकियों में हाज़िर होती हैं। आप चाहकर भी उन्हें बांधे नहीं रख सकते। अब परिस्थितियों को समझने की ज़रूरत है। गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजन गणित को छोड़कर सारे विषयों में फेल होते थे। आज के अभिभावक होते तो आसमान सिर पर उठा लेते। सोचिए, ऐसे में क्या हमारे पास रामानुजन होते?

अभिभावकों को सलाह

पंख मज़बूत करने दें – अभिभावकों को यह समझना चाहिए कि बच्चों की अपनी नैसर्गिक प्रतिभा है। उनको सपने बुनने, अपनी दुनिया जीने और खोजने की आज़ादी है। बच्चे दुनिया की इस रेस में दौड़ते हैं पर उन्हें सीखने और समझने का समय तो दें। एक बार जब उनके पंख मज़बूत हो जाएंगे, तो उड़ान (परवाज़) भरने के लिए खुद-ब-

किस क़दर हताश हैं बच्चे

'विचार योग फाउंडेशन' ने देश भर में बच्चों की मनोदशा पर एक अध्ययन किया। इसके अनुसार 42 प्रतिशत बच्चे ऊंचे लक्ष्यों से हताश हैं। 20 प्रतिशत भविष्य को लेकर आशंकित हैं, वहीं 6 प्रतिशत बच्चों में जीवन के प्रति निराशा है।

हैं - `मैं डॉक्टर नहीं बन पाया,पर तुम मेरे सपने पूरे करोगे।' `मैं वकील हूँ इसलिए तुम भी बड़े वकील बनो।' आपकी इच्छा कब बच्चे पर बोझ बन जाती है अहसास ही नहीं होता। और फिर यदि बच्चे में इस लक्ष्य के मुताबिक गुण और इच्छा नहीं हुई, तो उस पर विफल और नकारा का ठप्पा लगते देर नहीं लगती। यही जीवन समाप्त कर लेने वाले विचार का मनोवैज्ञानिक कारण है।

दरअसल,अभिभावक चाहते हैं कि बच्चा उनकी हर बात सुने। वे अपने आदर्शों से तुलना करते हैं। परंतु आजकल की पीढ़ी खुद तैयार हो जाएंगे।

योग्यता के आधार पर लक्ष्य बनाएं

हर बच्चा सवश्रेष्ठ शिक्षण संस्थान में पहुंच जाए, अव्वल ही आए, यह मुमकिन नहीं। शिक्षा का अर्थ है ज्ञान अर्जित करना, जानना, सीखना। बच्चों को समझाएं कि परीक्षा में फेल होकर भी आपने अनुभव और ज्ञान हासिल किया। यह असफलता नहीं है। ग़लत क़दम उठाने की ज़रूरत ही नहीं है। बच्चे के पिछले प्रदर्शन और रुचि के हिसाब से ही नए लक्ष्य बनाएं। आजकल करिअर के बहुत सारे विकल्प हैं। उनके बारे में जानने की कोशिश करें।

बच्चों के व्यवहार पर नज़र डालें

डब्ल्यू.एच.ओ. के एक अध्ययन में कहा गया है कि यह एक मिथक है कि आत्महत्याएं अचानक होती हैं और इसमें पहले से कोई चेतावनी या बच्चों की मनोदशा समझने के मौके नहीं मिलते। सच्चाई यह है कि ज़्यादातर मामलों में पहले से ही संकेत मिलने शुरु हो जाते हैं। बस इन्हें समय पर पहचानना ज़रूरी है। बच्चे के असामान्य व्यवहार, शब्दों और सोशल साइट्स पर उसके स्टेटस से

ज़ाहिर है, अंकों के नाम पर अंधी दौड़ में शामिल होने में कोई अक्लमंदी नहीं।

भी चीज़ें भांपी जा सकती हैं। परीक्षा परिणाम के लिए पहले से उनका मनोबल बढ़ाने की ज़रूरत है। परिणाम देखकर बच्चे कई बार ऐसा कदम उठाने के बारे में सोचते हैं, पर उनको पहले से ही हर परिस्थिति के लिए तैयार करें।

शर्मनाक अव्वल नंबर

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार 15-29 साल की उम्र में आत्महत्या के मामलों में भारत सबसे ऊपर है। 2013 में देश में परीक्षा व नतीजों के डर से 2,471 आत्महत्याएं हुईं। 2014 में रोज़ाना औसतन छः बच्चों ने खुदकुशी की।

बच्चों के काउंसलर बनें

बचपन में बच्चे माता-पिता से सारी बातें साझा करते हैं, लेकिन बड़े होते-होते वे बातें छुपाने लगते हैं। यह अंतर आता है हमारे व्यवहार में फ़र्क से। छोटे में उनकी आदतों की हम सराहना करते हैं, उन्हें दुलारते हैं। बड़े होते बच्चे हमें कोई अवांछित सच्चाई बताते हैं, तो हम उन्हें डांट देते हैं। यदि बच्चा कोई ग़लती भी कर रहा है तो शांति से उसे सुन लें। समझना एक धीमी प्रक्रिया है। बच्चे के काउंसलर बनें। इसका यह मतलब नहीं कि हर वक्त टोकते रहें। बस उसकी सारी बातें शांति से सुनें, फिर उसे हौसला दें और आगे बढ़ने के रास्ते सुझाएं।

अरब देशों में ऊंटो की एक खास दौड़ मशहूर है इसके लिए छोटे बच्चों को ऊंट की पीठ पर बांध दिया जाता है। इस चक्कर में बच्चे भय से कांपते हैं, रोते हैं, लहूलुहान भी हो जाते हैं। जीतने वाले बच्चे को फिर से अगली दौड़ के लिए तैयार कर दिया जाता है। एक तरह से देखें, तो यह दौड़ हमारी शिक्षा प्रणाली है, बच्चों को ऊंट पर बांधकर दौड़ाने वाले अभिभावक हैं और इसमें भाग लेने वाले मजबूर मासूम बच्चे हैं।

सवाल उठता है कि क्या बच्चों को क्रूर ऊँट दौड़ जैसी अंकों और करिअर की अंधी होड़ में ठेलना ज़रूरी है? क़तई नहीं। इसके बजाय उन्हें लायक बनाकर खुद के रास्ते और मंज़िल तय करने दें। यह सच है कि जीवन में प्रतिस्पर्धा से बचा नहीं जा सकता, पर हौसले, सही सलाह, मार्गदर्शन और साथ से इसे सुकून भरा ज़रूर बनाया जा सकता है, ताकि ये फूल खुद को शाखा से अलग करने के बारे में न सोचें। किसी ग़लत कदम के बारे में विचार भी नहीं।

देवघर-झारखण्ड। आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी का उद्घाटन करने के पश्चात् विधायक नारायण दास को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. रीता। साथ हैं सत्यनारायण भाई व सुनील भाई।

कटक-ओडिशा। शिव जयंती के अवसर पर शिव ध्वजारोहण करते हुए ब्र.कु. कमलेश, ब्र.कु. सुलोचना, मेयर मिनाक्षी बेहेरांद व अन्य भाई बहनें।

फर्रुखाबाद-उ.प्र.। महाशिवरात्रि महोत्सव में केक काटने के बाद चेयरमैन वत्सला अग्रवाल को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. शोभा। साथ हैं सफहा के जिलाध्यक्ष चन्द्रपाल सिंह यादव, सांसद प्रतिनिधि संजय गर्ग व अन्य।

पानीपत-हरियाणा। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए सांसद अश्विनी चोपड़ा की धर्मपत्नी किरण चोपड़ा, ब्र.कु. सुनीता, ब्र.कु. सरला, ब्र.कु. बिन्दू व अन्य गणमान्य महिलायें।

समस्तीपुर-बिहार। 80वीं शिव जयंती पर कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए ब्र.कु. रानी दीदी, कृषि सचिव नर्मदेश्वर लाल, जिलाधिकारी प्रणव कुमार, राजेश्वर जूट मिल के उपाध्यक्ष बी.एन. झा, बिहार इंडस्ट्रीज़ एसोसिएशन के पूर्व उपाध्यक्ष रामगोपाल सुरेका, बिहार प्रदेश वैश्य महासम्मेलन के कमल नोपानी, ब्र.कु. कृष्ण व अन्य।

धनगढ़ी-नेपाल। अनन्त विभूषित जगतगुरु शंकराचार्य ओमकानन्द सरस्वती महाराज को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. हीरा।